Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 30thApril 2019, Revised on 12th May 2019, Accepted19th May 2019

शोध–आलेख

जेंडर की समझ में असामंजस्य: परिवार एवं स्कूल के सन्दर्भ में एक अध्ययन

* राजकुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
Email-yaduraj1991@gmail.com, Mob.- 8527250490

मुख्य शब्द – परिवार–स्कूल के परिवेश, मानक, एवं नियम आदि.

सारांश

यह विदित है कि भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है। यहाँ के समाज में जेंडर आधारित काम का बंटवारा हमे दिखाई देता है। दूसरी तरफ स्कूल जेंडर आधारित काम के बंटवारे को नकारता है। जान डीवी के अनुसार ' स्कूल समाज का लघु रूप है' । तो क्या बच्चा इन दोनों जगह पर जेंडर को लेकर किस तरह का अनुभव करता है ? क्या बच्चा अपने को जेंडर भूमिकाओ को लेकर किसी द्वन्द में पाता है ? इस शोध को मुख्य उद्देश्य बच्चो के सामने परिवार एवं स्कूल के परिवेश , मानक , एवं नियमो को लेकर उभरे द्वन्दों को समझना है। शोधकर्ता ने उत्तरी दिल्ली के पच्चीस बच्चो से असंचरित साक्षात्कार लेकर बच्चो में उभरे इन द्वन्दों को समझने की कोशिश की है। शोध गुणात्मक है एवं इसका स्वरूप विश्लेसणात्मक है। निष्कर्ष में यह बात उभर कर आई कि परिवार एवं स्कूल बच्चो के अस्मिता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। परिवार जहा पुरातन सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा है वही स्कूल आधुनिक मूल्यो का वाहक है। इसलिए बच्चो में द्वन्द उभरते है।

परिचय

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है। हमारे देश में घर एवं बाहर का काम करने, नौकरी करने, खेलों का चयन करने आदि में लैंगिक भेदभाव दिखाई देते हैं। इस लैंगिक भेदभाव को किशोर किस नजरिए से देखते हैं? बच्चा स्कूल जाता है तो वह अपने घर के अनुभव लेकर जाता है। बच्चा अपने घर एवं आसपास की चीजों का अवलोकन करता है। क्या वह इस बात को संज्ञान में लाता है कि उनके घर में कौन घर का काम कर रहा है और कौन बाहर का काम कर रहा है? घर में कौन किस वक्त आता है और किस वक्त जाता है? सैद्धांतिक रूप से स्कूल लड़के-लड़कियों में किसी भी तरह के भेदभाव को नकारता है। लेकिन स्कूल में भी लैंगिक विभाजन बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेलों एवं उनके काम करने के तरीकों में दिखाई देता है। यह मैंने अपनी शिक्षा-शास्त्र की पढ़ाई के दौरान विद्यालय अनुभव कार्यक्रम में देखा। क्या किशोर इस लैंगिक विभाजन को समझ पाते हैं? इस माहौल को देखकर बच्चों के मन में किसी प्रकार के द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न होती है या नहीं? इन सवालों के उत्तर खोजना ज़रूरी है।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

भारत एक पितृसत्तात्मक समाज है। यहाँ पर महत्त्वपूर्ण निर्णय पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं। परंतु यह अवधारणा धीरे-धीरे यह टूट रही है क्योंकि महिला सशक्तिकरण हो रहा है। यहाँ पर शोधार्थी जेंडर में सिर्फ महिला और पुरुषों की ही बात कर रहा है। अन्य जेंडरों की नहीं। बच्चों का सामाजीकरण भी जेंडर के आधार पर अलग-अलग होता है।

कमला भसीन (2004) द्वारा लिखित पुस्तक *'लड़का क्या है? लड़की क्या है?'* हमारी जेंडर को लेकर बुनियादी समझ बनाने में मदद करती है। वो लिखती हैं कि "शारीरिक या जिस्मानी बनावट को प्राकृतिक लिंग कहते हैं। अपने शरीर की बनावट की वजह से लड़के का लिंग, पुरुष और लड़की का स्त्री होता है। यह प्राकृतिक लिंगभेद प्रकृति ने बनाया है और यह भेद हर परिवार, समाज और देश में एक-सा होता है। यानी शारीरिक रूप से लड़का हर जगह लड़का है और लड़की हर जगह लड़की। समाज की दी हुई औरत, मर्द की परिभाषा को सामाजिक लिंग या जेंडर कहते हैं"। जेंडर प्राकृतिक भेद को किस तरह सामाजिक भेद में परिवर्तित करता है, यह बात समझना आवश्यक है। इस संबंध में बात करते समय एक शब्द जो बार-बार जेहन में आता है; वह है- 'पितृसत्ता'। यह शब्द एक ऐसी सामाजिक संरचना की तस्वीर प्रस्तुत करता है जो कि लिंग आधार पर सामाजिक व्यवहारिकता को दर्शाती है। पितृसत्ता वह सिद्धांत है जिसके अंतर्गत समाज में एक लिंग के व्यक्ति का सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक रूप से दूसरे लिंग के व्यक्ति पर वर्चस्व स्थापित हो जाता है।

वी. गीता अपनी किताब *'जेंडर और शिक्षा'* में लिखती हैं कि "पुरुषत्व और स्त्रीत्व से जुड़े गुणों के विचार काल्पनिक नहीं हैं। जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें इनका वजूद है और यह वास्तविक हैं। इनका असर बुनियादी रुप से शुरू होता है जैसे कपड़े, भोजन, यौन संबंध, विचार आदि से। यह हमारे अनुभवों को मायने देने, अपने और बाकी लोगों के बारे में राय बनाने और उन्हें समझने में मदद करते हैं। यह विचार महिलाओं व पुरूषों दोनों पर अलग-अलग ढंग से असर डालते हैं। हालांकि इन विचारों को इंसान निष्क्रिय रूप से स्वीकार नहीं करता। उनके साथ जद्दोजहद करता है। इन्हें अपने हिसाब से बदलता और पलटता है। इस तरह हर मामले में यह विचार वास्तविक हो जाता है और खास संदर्भों में इस्तेमाल किया जाने वाला पहलू बन जाता है।

दूसरी ओर समाज में केवल पुरुष और औरत के रूप में पहचान इतनी अहम नहीं है। कुछ अन्य पहचाने भी आवश्यक और प्रासंगिक हैं, और उतनी ही प्रतिबंधित कायदों और अपेक्षाओं से जुड़ी हुई हैं जितनी पुरुष व औरत की पहचाने। उदाहरण के लिए धार्मिक पाबंधियाँ। भारत में केवल ब्राह्मणों को ही पुरोहितों के कार्य संपन्न करने का अधिकार है।

National focus group on gender issues in education में लिखा है कि 'जेंडर को लेकर एक सशक्त पाठ्यचर्या से विद्यार्थियों के अंदर दृढ़ लिंग अस्मिता को लेकर बने विचारों को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने में मदद मिलती है। जिसमें कार्य, शरीर, सेक्सुअलिटी, शादी, पितृत्व, परिवार, जाति, समुदाय, राज्य, आधुनिकता हिंसा, विजातीयता और वर्गीकरण जैसे मुद्दों पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण बनाने में मदद करने की बात करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) शिक्षा से जुड़े अधिकतर पहलुओं पर प्रकाश डालता है। जेंडर संबंधी भेद की समस्याओं को इस दस्तावेज में गंभीरता से लिया गया है तथा इस तरह के प्रावधान दिए गए हैं, जिससे लिंग संबंधी भेद

या अन्य किसी भी तरह के भेद को शिक्षा या स्कूल व्यवस्था को बढ़ावा ना दिया जाए। असमान लैंगिक संबंध न केवल वर्चस्व को बढ़ावा देते हैं बल्कि वह लड़के-लड़कियों में भी तनाव पैदा करते हैं तथा उनकी मानवीय क्षमताओं के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता में बाधा पहुँचाते हैं। यह सबके हित में है कि मनुष्य को लिंग असमानताओं से मुक्त कराया जाए। यहाँ पर भी एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर ताकत या दबाव का इस्तेमाल किया जाता है। वहाँ घुटन का माहौल अपने आप बन जाता है। जब व्यक्ति विशेष या समाज द्वारा एक लिंग के व्यक्तियों के लिए कोई ढांचा तैयार किया जाता है तो दूसरे वर्गों के लिए ढांचा स्वयं तैयार हो जाता है।

NCF (2005) पाठ्य पुस्तकों और शिक्षा से लिंग भेदभाव को खत्म किए जाने की बात करता है। वहीं पोजीशन पेपर जेंडर को 'people's issue' कहते हुए पुरुष व स्त्री दोनों को एक परिधि में रखकर देखे जाने की बात करता है। 'Gender is not just a woman's issue.... It's a people's issue."

बचपन से ही माता-पिता अपने बेटे और बेटियों को अलग नजरिए से देखते हैं। स्टर्न और कक्कड़ (1989) के अनुसार 'माता-पिता अपनी नवजात बच्ची का विवरण छोटी, सोम्य, कम ध्यान देने वाली, क्यूट, कोमल और बेटों से अधिक शारीरिक बनावट पर ध्यान देते हैं। इसके साथ-साथ व्यस्क उन बच्चों के साथ कोमलता भरा व्यवहार करते हैं। जिनके बारे में उन्हें लगता है कि यह लड़की है और लड़कों के साथ मर्दाना व्यवहार करते हैं। इसी तरह माता-पिता और बाकी लोग मिलकर शुरुआती दिनों से ही लड़के और लड़कियों को लेकर अलग-अलग व्यवहार करते हैं। सामाजीकरण के दौरान बच्चों को लिंग समुचित व्यापार करना सिखाया जाता है। जैसे लड़कों से मर्दाना और लड़कियों से स्त्रीयोचित व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है'।

बंडूरा (1980) के अनुसार 'लिंगयोचित व्यवहार को आकार देने में पुनर्बलन और मॉडलिंग आवश्यक रोल अदा करते हैं। लिंगयोचित व्यवहार बच्चे दोनों लिंग के व्यक्तियों का व्यवहार देख कर सीखते हैं। हालांकि वह अपने लिंग के हिसाब से उचित व्यवहार ही प्रदर्शित करते हैं क्योंकि उसके लिए उन्हें पुनर्बलन दिया जाता है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं परिवार के बाहर की दुनिया की आवश्यकता सेक्स रोल्स को आकार देने में बढ़ती चली जाती है'।

मुखोपाध्याय (1992) के अनुसार 'परिवार अपने बेटे और बेटियों के लिए अलग शैक्षिक वातावरण प्रदान करते हैं। जिसमें दोनों की शिक्षा में संसाधनों का इस्तेमाल, समय, शैक्षिक अनुभवों की सीमा तय करना, आदि में भिन्नताएं होती हैं। इसके साथ-साथ आगे बढ़ने के लिए दिया गया सहयोग भी भिन्न होता है। वह कहती हैं "Even the well off education oriented families....view educational achievements especially in scientific fields differently for girls than boys and are less includes to invest family resources in the academic success of daughters than sons".

सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों के साथ-साथ जेंडर असमानता भी स्कूल को कई तरह से प्रभावित करती है।

अक्कर (1987) के अनुसार 'पाठ्यचर्या और विद्यालय शिक्षा में 'कोड' हैं जो लिंगयोचित व्यवहार की बात करता है, जो कि गुप्त है। यह केवल स्कूल के रोजमर्रा के व्यवहार, अध्यापक के व्यवहार और स्कूल में साथियों के बीच बातचीत में उभर कर आता है।

शोध-प्रकृति

यह शोध गुणात्मक है एवं इसका स्वरूप विश्लेषणात्मक है। सामाजिक विज्ञान में जो अनुसंधान किए जाते हैं उनका वास्तविक उद्देश्य सामाजिक वस्तुस्थिति को समझना है। सामाजिक विज्ञान की प्रकृति विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक होती है। सामाजिक विज्ञान में हम मानव व्यवहार का अध्ययन करते हैं। मानव व्यवहार सार्वभौमिक नहीं होता है। मानव व्यवहार संदर्भ विशेषीकृत होता है।

शोध-प्रश्न

- विद्यालय एवं परिवार के नियमों एवं परंपराओं में जेंडर को लेकर क्या कोई अंतर है?
- बच्चा परिवार तथा विद्यालय परिवेशों में किस प्रकार अपनी जेंडर से संबंधित भूमिका को समझता है?
- बच्चा विद्यालय एवं परिवार के मानकों के मध्य जेंडर को लेकर किस प्रकार के द्वंद्वों का सामना करता है?
- इन द्वंद्वों से जुझने के लिए बच्चे क्या करते हैं?

शोध-उद्देश्य

शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यालय जाने वाले बच्चों जेंडर से संबंधित

के उन द्वंद्वों का अध्ययन करना है जो परिवार एवं विद्यालय के परिवेश, मानक, एवं नियमों के कारण उत्पन्न होते हैं।

शोध क्षेत्र और प्रतिचयन

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र आठवीं से बारहवीं कक्षा तक विद्यालय जाने वाले विद्यार्थी हैं जिसके तहत लिंग को आधार नहीं बनाया गया है। क्योंकि प्रस्तावित क्षेत्र अति विस्तृत है अत: प्रतिचयन के तौर पर 25 विद्यार्थियों को शोध का हिस्सा बनाया गया है।

प्रतिदर्श तक पहुँच

शोधार्थी ने विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों से बातचीत की कि वह बच्चों के साथ अनौपचारिक बातचीत करवा दें। परंतु शिक्षकों का कहना था कि स्कूल में खाली वक्त नहीं होता। जो भी खाली वक़्त मिलता है उसमें विस्तृत चर्चा करना संभव नहीं था। अतः शोधार्थी ने स्कूल के बाहर बच्चों के घर एवं ट्यूशन की जगह पर बच्चों से बातचीत करने का निश्चय किया।

इन विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक से चुना गया। प्रतिचयन कक्षा आठ से बाहरवीं के कुल 25 विद्यार्थियों को समाहित करता है जिसका स्पष्टिकरण निम्नलिखित तालिका से होता है:

कक्षा	संख्या
आठवीं	5
नौवीं	5
दसवीं	5
ग्यारवीं	5
बारहवीं	5

शोधकर्ता ने शोध कार्य के लिए दिल्ली के सरकारी स्कूलों एवं प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का चयन किया। शोधकर्ता ने प्रत्येक सहभागी से मिलकर अपना परिचय दिया और अपने शोध कार्य के बारे में जानकारी साझा की। शोध की प्रकृति एवं उद्देश्य स्पष्ट किए। सहभागियों को यह भी बताया कि आपकी व्यक्तिगत पहचान कहीं भी उजागर नहीं की जाएगी।

शोध की तकनीक

इस अध्ययन का स्वरूप एवं प्रकृति विश्लेषणात्मक एवं गुणात्मक है। शोधकर्ता ने इसमें गुणात्मक विधियों का प्रयोग किया है। शोध उपकरण में असंरचित साक्षात्कार का उपयोग किया है।

परिसीमन

- प्रस्तुत शोध कार्य उत्तरी दिल्ली में किया गया है।
- प्रस्तुत शोध केवल 25 बच्चों पर किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

भारत एक पितृसत्तात्मक समाज है। घर का काम, नौकरी, खेल, घर से बाहर का काम आदि को लेकर लैंगिक भेदभाव है। किशोरावस्था में बच्चे इसे कैसे देखते हैं। इसको लेकर बच्चों से बातचीत की गई। बच्चों से सवाल किया गया कि आपके घर में कौन काम करता है? इसका अधिकांश बच्चों ने जवाब दिया कि सभी काम करते हैं। बच्चों से पूछा गया कि घर का काम कौन करता है? इस पर अधिकांश बच्चों का जवाब था कि घर का काम तो मम्मी और बहन करते हैं। लड़कियों का जवाब था कि मैं और मम्मी करते हैं। अधिकांश बच्चों ने यह बताया कि घर के बाहर का काम पापा, दादा या घर के अन्य पुरुष करते हैं। क्या आप इस काम के विभाजन से संतुष्ट हैं? इस पर बच्चों ने अलग-अलग जवाब दिए।

एक बच्चे (दसवीं कक्षा) ने कहा कि *"काम का यह विभाजन गलत है क्योंकि पापा को तो ऑफिस से छुट्टी मिल जाती है परंतु मम्मी की कभी कोई छुट्टी नहीं होती है। मम्मी हर दिन काम करती हैं। मुझे इस बात का बुरा लगता है"।*

एक बच्चे (नौवीं कक्षा) ने कहा कि *"काम का यह विभाजन गलत तो है परंतु हमेशा से घर का काम लड़कियाँ ही करती हैं तो अब वह नौकरी के साथ घर का काम भी करें। जब लड़कियाँ दोनों जगह का काम संभाल सकती हैं तो उन्हें करना चाहिए"।*

एक बच्चे (10 वीं कक्षा) ने बताया कि *"लड़का-लड़की कोई भी नौकरी करें तो उसे कोई दिक्कत नहीं है। मेरी मम्मी बाहर नौकरी कर सकती हैं पर मम्मी पढ़ी-लिखी नहीं है। मम्मी घर का काम अच्छे से करती हैं तो यही काम करना चाहिए। परंतु अगर मम्मी नौकरी करने लगेंगी तो घर का काम पापा तो करेंगे ही नहीं, मुझे ही करना होगा"।* शोधार्थी ने बच्चे से पूछा, पापा काम क्यों नहीं करेंगे? तो बच्चे ने आश्चर्यचकित होकर कहा, *"अच्छा ! पापा काम करेंगे"।*

एक बच्ची (नौवीं कक्षा) ने बताया कि *"मम्मी अपनी मर्जी से घर का काम करती है परंतु मुझे महसूस होता है कि मम्मी को बाहर भी काम करना चाहिए। मम्मी को कभी बाहर जाना होता है तो घर का काम करके जाती हैं। अगर वो बिना घर का काम करे बाहर जाती हैं तो पापा या दादी गुस्सा होते हैं और बोलते हैं कि अगर बाहर जाना ही था तो कम से कम काम करके जाती"।*

एक बच्चे (10 वीं कक्षा) ने कहा कि *"लड़कियाँ अगर पढ़ने में अच्छी हैं तो भी काम करती हैं क्योंकि शादी के बाद उन्हें काम करना पड़ता है"।* शोधार्थी ने पूछा लड़के क्यों नहीं करते? तो बच्चे ने कहा कि *"जो आएगी वह क्या करेगी"* अर्थात शादी के बाद जो पत्नी आएगी वह क्या करेगी।

एक बच्ची (10 वीं कक्षा) ने बताया कि *"मेरा एक छोटा भाई है और मैं खुद बड़ी हूँ। फिर भी घर के आस-पास या बाहर से कुछ सामान लाना हो तो घरवाले छोटे भाई को ही भेजते हैं, मैं बहुत कम जाती हूँ"।* इसी बच्ची ने बताया कि *"बहुत बार मम्मी की तबीयत खराब होती है इसके बावजूद सारा काम मम्मी ही करती हैं। मुझे यह बुरा लगता है"।*

बच्चों के लिए घर में काम के विभाजन को लेकर अलग-अलग मत है। इसमें लड़के एवं लड़कियों के जवाब भी अलग हैं। कुछ लड़कों के लिए यह आश्चर्य की बात है कि घर का काम पुरुष करेंगे। कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनको अपनी मम्मी एवं बहन के द्वारा ही घर का सारा काम करना दुखदाई लगता है।

बच्चों से नौकरी करने से संबंधित बात की गई तो अधिकांश बच्चों ने कहा कि नौकरी करना तो लड़की-लड़के दोनों का ज़रूरी है। इस जवाब के साथ बच्चों ने अलग-अलग तरह से किंतु-परंतु जोड़े।

एक बच्ची (नौवीं कक्षा) ने कहा कि *"मुझे पसंद हुई तो नौकरी कर लूँगी परंतु ऐसे ज़रूरी नहीं है"।* इस पर बच्ची से एक काल्पनिक स्थिति बनाकर सवाल किया गया कि अगर एक नौकरी है और आप दो भाई-बहनों में से किसी एक को नौकरी करनी है तो किसे करनी चाहिए? इस पर बच्चे ने कहा कि *"मैं नहीं करूंगी। मेरा भाई वह नौकरी कर लेगा क्योंकि लड़कों का नौकरी करना ज़्यादा ज़रूरी है। मेरा काम तो वैसे भी चल जाएगा"।*

एक बच्चे (नौवीं कक्षा) ने बताया कि *"मैं पढ़ने में अच्छा नहीं हूँ तो नौकरी तो मिलेगी नहीं। पापा खुद मेरे लिए कुछ काम खुलवा देंगे और शादी भी तभी होगी जब मैं कुछ काम करने लगूंगा। क्योंकि पापा तो बूढ़े हो जाएँगे, कब तक काम करेंगे"।* साथ ही बच्चे ने कहा कि *"अगर मेरा कोई बड़ा भाई होता तो वह नौकरी करता। बहन की नौकरी करने के बारे में मुझे नहीं पता"।*

एक बच्चे (11वीं कक्षा) ने बताया कि *"मेरी बहन का मन होगा तो नौकरी करेगी या घरवालों के ऊपर है"।*

एक बच्चा (11 वीं कक्षा) ने बताया कि *"मेरे हिसाब से मेरा और मेरी बहन का नौकरी करना ज़रूरी है। परंतु घरवाले बहन को नौकरी करने देंगे या नहीं यह मुझे नहीं मालूम। बहन की शादी के बाद अगले करने देंगे या नहीं उनके ऊपर है"।* अगले वाले अर्थात जहाँ लड़की की शादी होगी। शोधार्थी ने जब पूछा कि क्यों नहीं करने देंगे? तो इस पर बच्चे ने कहा कि *"मेरी मम्मी शिक्षिका बनना चाहती थी। परंतु दादी ने नहीं बनने दिया क्योंकि तब पापा की नौकरी नहीं लगी और मम्मी नौकरी करती तो लोग बोलते की बहू की कमाई खा रहे हैं"।*

एक बच्ची (10 वीं कक्षा) ने कहा कि *"मैं नौकरी करना चाहती हूँ, पैसे कमाने के लिए नहीं लेकिन आत्मसम्मान के लिए"।*

उपयुक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश बच्चे अपने एवं अपने भाई-बहन की नौकरी के बारे में कहते हैं कि सभी को नौकरी करनी चाहिए। परंतु जैसे ही लड़की की नौकरी की बात आती है तो किंतु-परंतु लग जाते हैं। बच्चों का कहना हैं कि यह पापा, घरवालों या फिर शादी के बाद आगे वालों पर निर्भर करता है कि वो नौकरी करेगी या नहीं। बच्चे यह बात घर एवं आसपास से सीख रहे हैं।

बच्चों से जब पूछा गया कि आप स्कूल में एवं स्कूल के बाहर कौन से खेल खेलते हो? इसमें अधिकांश बच्चों ने कहा कि लड़कों एवं लड़कियों के खेलों में अंतर होता है परंतु कुछ बच्चों ने कहा कि आज के समय में अंतर नहीं है और सब सभी खेल खेलते हैं।

एक बच्ची (दसवीं कक्षा) ने बताया कि *"लड़के रफ एंड टफ खेलते हैं जबकि लड़कियाँ शांत और तार्किक होती हैं। मुझे लड़कों की तरह रहना पसंद नहीं है। लड़के शर्ट बाहर कर के घूमते रहते हैं, एक-दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते हैं। लड़कियाँ ऐसा नहीं करती हैं लड़कियाँ समझदार होती हैं"।*

एक लड़के (11वीं कक्षा) ने कहा कि *"मैं जिस स्कूल में पढ़ता हूँ उसमें लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग शारीरिक शिक्षक हैं। लड़कों के लिए पुरुष शारीरिक शिक्षक है व लड़कियों के लिए महिला शारीरिक शिक्षिका है। हमारे स्कूल में लड़के-लड़कियाँ बैडमिंटन के अलावा कोई भी खेल साथ नहीं खेलते हैं। बैडमिंटन भी कुछ लड़कियाँ ही खेलती हैं। जब कभी शारीरिक शिक्षा के शिक्षक लड़कियों को लड़कों के साथ कोई खेल खेलने के लिए बोल देते हैं तो लड़कियाँ मुंह बना लेती हैं। लड़कियाँ सिर्फ बैठकर बातें करती हैं। स्कूल में लड़कों के साथ खेल खेलने में कोई रोक-टोक नहीं है"।*

एक लड़की (11वीं कक्षा) ने बताया कि *"लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग खेल खेलते हैं। लड़कों के खेल अलग होते हैं और लड़कियों के खेल अलग होते हैं। लड़कियाँ कुर्सी-कुर्सी, पिट्ठू आदि खेल खेलती हैं। लड़के गेंद से खेलते हैं। अगर लड़कियाँ हमारे साथ गेंद से खेलेंगी तो उन्हें गेंद से चोट लग जाएगी और वह रोने लगेंगी"।*

एक लड़की (नौवीं कक्षा) ने कहा कि *"लड़के धाकड़ खेल खेलते हैं, जैसे कबड्डी फुटबॉल आदि। जबकि लड़कियाँ ऐसे खेल ज़्यादा खेलती हैं जिनमें चोट लगने का डर कम हो। जैसे बैडमिंटन, बास्केटबॉल, खो-खो आदि"।*

एक लड़की (11वीं कक्षा) ने बताया कि *"जब कभी हम लड़कियाँ पिट्ठू खेलती हैं तो कभी-कभी कोई लड़का भी साथ खेल लेता है। उस लड़के को साथ खेलता हुआ देखकर बाकी लड़के उसे बोलते हैं कि क्या लड़कियों वाला खेल खेल रहा है"।*

बच्चों से हुई उपरोक्त बातचीत से स्पष्ट है कि बच्चों को किशोरावस्था तक आते-आते यह स्पष्ट हो जाता है कि लड़के-लड़कियों के खेल अलग हैं। लड़कियाँ कमजोर होती हैं, वो बातें ज़्यादा करती हैं। बहुत से खेलों को हमने जेंडर के आधार पर विभाजित कर दिया है कि फलां खेल सिर्फ लड़कियाँ ही खेलेंगी और फलां खेल सिर्फ लड़के ही खेलेंगे। बहुत बार कोई लड़का या लड़की इस विभाजन को तोड़ने की कोशिश करता है तो उस बच्चे के सभी साथी उसका मजाक उड़ाते हैं।

बच्चों से जब स्कूल में काम को लेकर सवाल किया गया तो अधिकांश बच्चों ने माना कि स्कूल में काम करने को लेकर अंतर है।

एक बच्चे (9 वीं कक्षा) ने बताया कि *"लड़कियाँ ड्राइंग में अच्छी होती हैं तो स्कूल में ड्राइंग का कोई भी काम सिर्फ लड़कियाँ ही करती हैं"।*

एक लड़के ने कहा कि *"लड़कियाँ सभी काम करती हैं। शिक्षक की सभी बातें मानती हैं। सारा काम समय पर कर देती हैं इसलिए मॉनिटर भी उन्हीं को बनाया जाता है। लड़के समय पर काम नहीं करते हैं वो थोड़ी देर कर देते हैं"।*

एक बच्ची (दसवीं कक्षा) ने बताया कि *"लड़के-लड़कियों के काम में अंतर दिखता है। उदाहरण देते हुए कहा कि स्कूल के वार्षिकोत्सव पर सजाने का सारा काम लड़कियों को ही करने के लिए बोला जाता है। जबकि हमारी कक्षा में एक-दो लड़के हैं जो काफी सर्जनात्मक हैं परंतु उन्हें मौका नहीं मिलता है। लड़कों को कुर्सियाँ लाना, माइक लगाना आदि काम करने को बोला जाता है"।* लड़के-लड़कियों के काम करने को लेकर स्कूल भी जेंडर पूर्वाग्रहों को बढ़ावा दे रहे हैं। पहले से यह मानकर चल रहे हैं कि कुछ काम लड़के बेहतर तरीके से करते हैं और कुछ काम लड़कियाँ बेहतर तरीके से करती हैं।

बच्चों से जब पूछा गया कि आपने जो उपरोक्त बातचीत के दौरान जो उदाहरण दिए हैं इनके बारे में आपकी समझ कहाँ से बनी? बच्चों ने इसपर अलग-अलग तरह के जवाब दिए। कुछ बच्चों ने कहा कि उनकी यह समझ घर से बनी है। कुछ बच्चों ने कहा कि ना घर से बनी है और ना स्कूल से बनी है बल्कि उन्होंने अपने आस-पास जो देखा उसे देखकर बनी है। उन्होंने अपने अनुभवों से ही जान लिया। तब शोधार्थी ने सवाल किया कि यह सब भी तो आपने स्कूल या घर पर ही देखा होगा? इसपर अधिकांश बच्चों का जवाब था कि घर एवं समाज का प्रभाव ज़्यादा पड़ा है।

अधिकांश बच्चों ने बताया कि घर पर लड़के ज़्यादा खेल खेलते हैं। लड़कियाँ घर के काम में हाथ बँटाती हैं। लड़के खेल खेलने के लिए घर से बाहर भी जाते हैं लड़कियां घर में या आस-पास ही चलती हैं अधिकांश बच्चों ने यह बताया कि स्कूल में शिक्षकों द्वारा ऐसा कभी नहीं कहा जाता कि लड़कियां यह खेल नहीं खेलेंगे या लड़के यह खेल नहीं खेलेंगे लड़के एवं लड़कियां अपनी मर्जी से जो खेल खेलना चाहे खेल सकते हैं ।

परिचर्चा

जेंडर के आधार पर भी विद्यालय एवं परिवार के नियमों एवं परंपराओं में फर्क है। सैद्धांतिक तौर पर विद्यालय के नियमों, जैसे शैक्षिक नीतियां, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क में जेंडर भेदभाव को पाटने की कोशिश की गई है। आंकड़ों से विद्यालयी शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य लैंगिक समानताओं को अधिस्थापित करना है। जिसके तहत पाठ्यक्रम एवं अन्य विद्यालय गतिविधियों के तहत इस बात के प्रयास करने की अपेक्षा की जाती है कि जेंडर के आधार पर किसी तरह का भेदभाव न किया जाए। परंतु विद्यालय में किया जाने वाला कार्य विभाजन इसके विपरीत दिशा में इंगित होता है। यहँ यह समझना भी महत्त्वपूर्ण है कि विद्यालय में पढ़ाए गए लैंगिक समानता के अध्याय का लगभग-लगभग विपरीत संदर्भ बच्चे अपने पारिवारिक परिवेश में पाते हैं। जो जेंडर को लेकर उनकी समझ में द्वंदात्मक स्थिति उत्पन्न करते हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि अधिकतर बच्चों के पारिवारिक स्तर पर जेंडर के आधार पर किया जाने वाला कार्य विभाजन बहुत मुखर है। जिसमें व्यवहार की बात तो दूर, चर्चा का भी स्थान नहीं है। यह कुछ ऐसा है जैसे पहले से विद्यमान संस्कारों को भी लड़के-लड़कियों को आत्मसात करना है। जेंडर को लेकर यह विभेदीकरण बच्चों के सांस्कृतिक संदर्भ में इतना दोहराया जाता है कि जेंडर को लेकर उनके समक्ष समानता और असमानता के दायरों से बाहर ही नहीं निकल पाती। जहाँ विद्यालयों में सभी को समान होने की समझ दी जाती है, वहीं परिवार शायद इसके विपरीत समझ के साथ काम करता है। जो बच्चों के बीच जेंडर अस्मिता को लेकर द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न करती है। निर्णय-निर्माण को लेकर भी पारिवारिक और विद्यालय संदर्भ द्वंदात्मक स्थिति उत्पन्न करते हैं। विद्यालय जहाँ निर्णय लेने के अवसर उपलब्ध कराता है, वहीं परिवार विशेषकर लड़कियों को इस तरह के अवसरों से वंचित रखता है। स्व निर्णय लेने के अवसर किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि निर्णय लेने को लेकर परिवार और विद्यालय संस्थाओं में समान समझ नहीं है। अतः विद्यार्थी को स्वयं के निर्णय लेने के आत्मविश्वास पर शंका उत्पन्न होती है। लड़कियों के संदर्भ में यह इसलिए और अधिक विकट स्थिति पैदा करता है क्योंकि लड़कियां विद्यार्थी बनाम लड़की होने के द्वंद्व से जूझती हैं। विद्यालय जहाँ उन्हें एक शिक्षार्थी के रूप में स्वीकार करता है, वहीं परिवार उन्हें एक लड़की के रूप में स्वीकृति प्रदान करता है। यह दोहरी संदर्भित स्वीकृति समय के साथ उनके व्यक्तित्व का न अलग होने वाला हिस्सा बन जाती है। इस तरह से लड़कों से की जाने वाली अपेक्षाएं उनके व्यक्तित्व को आकार देती हैं। आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों के द्वारा की जाने वाली इच्छाएं, परिवार द्वारा की जाने वाली इच्छाओं से कई बार मेल नहीं खाती हैं। इस प्रकार के द्वंद्वात्मक आंकड़ों से परिलक्षित होता है कि विद्यार्थी डॉक्टर बनना चाहता है पर परिवार उसे इंजीनियर बनाना चाहता है। लड़कियों के लिए यह स्थिति अधिक विकट साबित होती है। वह अपने भविष्य के निर्माण के लिए उपलब्ध प्रोत्साहन द्वारा विद्यालय परिवेश, परिवार द्वारा पुनर्निर्धारित किए गए मानको से टकराव की स्थिति में होता है। जिसके चलते विद्यार्थी को अपने

व्यवसायिक चयन को लेकर द्वंद्व का सामना करना पड़ता है, जो वर्तमान एवं भविष्य में उनमें भूमिका दुविधा उत्पन्न करता है।

निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

परिवार एवं स्कूल बच्चों के अस्मिता निर्माण एवं उनकी पहचान स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चा इन दोनों संस्थाओं से दुनिया को देखने का अपना नजरिया विकसित करता है। अपने आत्म-संप्रत्यय का निर्माण करता है। घर एवं स्कूल बच्चे का प्राथमिक एवं द्वितीय सामाजीकरण करते हैं। बच्चा घर एवं स्कूल से भाषा, धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र, संदर्भिक अपनी समझ विकसित करता है। बच्चा स्कूल जाने से पहले अपने परिवार एवं आसपास के वातावरण में घटित हो रही घटनाओं का अवलोकन करता है। अपने आस-पास हो रही इन घटनाओं से बच्चा अनुकरण एवं सामंजस्य करके अपनी समझ बनाता है| स्कूली माहौल बच्चे के घर एवं आसपास के वातावरण से सैद्धांतिक तौर पर मेल नहीं खाता है क्योंकि स्कूल एवं परिवार अलग-अलग संस्थाएं हैं। इन संस्थाओं के उद्देश्य एवं मूल्य अलग-अलग हैं। विद्यालय एवं परिवार के मूल्य एवं उद्देश्यों में फर्क होने की वजह से ही वह अपने आप को द्वंद्व की स्थिति में पाता है। बच्चे के द्वंद्व विभिन्न संदर्भों में होते हैं। इसमें बच्चों से बातचीत द्वारा उभरकर आए भाषा, धर्म, जेंडर, जाति, क्षेत्र आदि मुद्दों पर विद्यालय सैद्धांतिक तौर पर, संवैधानिक मूल्यों मुख्यतः समानता एवं स्वतंत्रता की बात करता है। इसके विपरीत परिवार एवं समाज में इन मुद्दों पर भिन्नताएं मौजूद हैं। इन असमानताओं एवं विविधताओं के सापेक्ष ही बच्चा अपने द्वंद्व निर्मित करता है और उनसे जूझता भी है।

NCF (2005) बच्चों के दैनिक अनुभवों को कक्षा में लाने की बात करता है। परंतु यहाँ दुविधा यह है कि समाज में जो असमानताएँ एवं विविधताएँ हैं, अगर हर समूह के बच्चों के दैनिक अनुभवों को कक्षा में जगह दी जाए तो उन सभी के अनुभव विरोधाभासी होंगे। इन द्वंद्वों से बच्चे के आत्म-संप्रत्यय एवं आत्म-सम्मान प्रभावित होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अनेक शैक्षिक निहितार्थों को समाहित किए हुए है, जिसमें शैक्षिक नीतियों के निर्माण, पाठ्यचर्या निर्माण, पाठ्यपुस्तक लेखन, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, मूल्यांकन, शिक्षक-छात्र संबंध, छात्र-छात्र संबंध और विद्यालय एवं परिवार के बीच की दूरी को कम करना आदि सम्मिलित हैं।

नीति-निर्माताओं के लिए आवश्यक है कि नीतियाँ बनाते समय वह इस बात की अनिवार्यता पर ध्यान दें कि बच्चा विद्यालय और परिवार के आपसी संबंधों के चलते किस प्रकार के द्वंद्वों का सामना करते हैं और उनसे किस प्रकार निपटते हैं ताकि कारगर नीतियों का निर्माण किया जा सके।

पाठ्यचर्या निर्माण के समय बच्चों के सामने आने वाले द्वंद्वों को ध्यान में रखा जाए जेंडर को यथोचित जगह दी जा सके।

शिक्षक के लिए अनिवार्य है कि कक्षा का माहौल लोकतांत्रिक रखें। सभी समुदायों से आने वाले बच्चों के अनुभवों को कक्षा में जगह प्रदान करें ताकि इन दैनिक अनुभवों पर चर्चा हो सके और बच्चे न केवल विविध संदर्भों को समझ पाएँ अपितु उन संदर्भों के सापेक्ष अपनी समझ विकसित कर सकें।

शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यालय एक सामाजिक संस्था है जहाँ विविध पृष्ठभूमियों वाले विद्यार्थी अपने अनुभवों को साझा करते हैं। अत: संगी-साथियों के आपसी संबंधों को मजबूत करने की ज़रूरत है ताकि वे न केवल एक-दूसरे की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को समझ पाएँ बल्कि उसे सम्मान भी दे पाएँ। ऐसा करना विद्यार्थियों के मध्य विश्वास, सहयोग और आपसी भाईचारे को बढ़ावा देगा। इससे एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता और स्वीकार्यता का भाव विकसित हो सकेगा, जिससे वह अपने संगी-साथियों के संदर्भित अनुभवों का उपहास न उड़ाएँ। विद्यालय और परिवार के बीच जो अंतर है उसे पाटने की ज़रूरत है।

विद्यालय के मूल्यों के प्रति बच्चों के अभिभावकों की रुचि को बढ़ाना होगा ताकि अभिभावक विद्यालय के मूल्यों के प्रति खुद भी जागरुक हो सके और अपने बच्चों को भी जागरुक कर पाएँ। इससे बच्चों को अपने द्वंद्वों से निपटने में सहायता मिलेगी।

शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच के संबंधों को लोकतांत्रिक और सहज बनाना भी आवश्यक है ताकि शिक्षक, विद्यार्थी के दृष्टिकोण को समझ पाएँ और उसी संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बच्चों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाएँ।

अत: इस बात की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता कि विद्यालय और परिवार के परिवेश को बच्चे के लिए सहज और सुगम बनाना अनिवार्य है जिसके लिए विद्यालय और परिवार के बीच की दूरी को कम करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- भसीन, क. (2004). *लड़का क्या है? लड़की क्या है?*. नई दिल्ली: जागोरी प्रकाशन.
- Bhattacharjee, N. (1999). *Culture, Socialization and Human Development: Theory, Research and Applications in India*. New Delhi: Sage Publications.
- दुबे, ली. (2012). *लिंगभाव का मनोवैज्ञानिक अन्वेषण: प्रतिच्छेदी क्षेत्र.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
- डुई, जो. (2009). *स्कूल और समाज.* नई दिल्ली: आकार बुक्स.
- Lareau, A. (1987). Social Class Differences in Family- School Relationship: The Impotance of Cultural Capital. *Sociology of Education*, pp.73-85.
- Laura, A. R. (2007). Between Home and School. *University of Pennsylvania Law Review*, Vol:155(4).
- कौल, लो. (1998). *शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली.* नई दिल्ली: विकास पब्लिकेशन.
- कुमार, कृ. (1993). *समाज और शिक्षा.* नई दिल्ली: प्रभात ऑफसेट प्रेस.

- Kumar. S. (2017). *Reader in Social Theory of Education*. New Delhi: Research Media.
- Mann, R. (2017). Student-Teacher's Perception of Cast Relaxation Policy in India, *M.Ed. Dissertation*, University of Delhi.
- त्रिपाठी, श्री. (2017). *सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन.

*** Corresponding Author:**

राजकुमार, शोधार्थी

शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

Email-yaduraj1991@gmail.com, Mob.- 8527250490